

---

# NityanandasvamiVirachitam Ruchira Stotram

नित्यानन्दस्वामिविरचितं रुचिरस्तोत्रम्

## Document Information

---

Text title : NityanandasvamiVirachitam Ruchira Stotram

File name : nityAnandasvAmiVirachitaMruchirastotram.itx

Category : vishhnu, svAminArAyaNa, krishna

Location : doc\_vishhnu

Author : nityAnandasvAmi

Acknowledge-Permission: Swaminarayan Sampradaya

Latest update : August 8, 2024

Send corrections to : sanskrit at cheerful dot c om

---

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

**Please help to maintain respect for volunteer spirit.**

---

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

---

August 9, 2024

*sanskritdocuments.org*

---

नित्यानन्दस्वामिविरचितं रुचिरस्तोत्रम्



(तोडकवृत्तम्)

परमाद्भुत-दिव्यवपू रुचिरं  
रुचिरेऽद्भितलेऽगुलयो रुचिराः ।  
नभमाङ्गलमिन्दुनिभं रुचिरं  
रुचिराधिपते रषिलं रुचिरम् ॥ १ ॥

प्रपदे रुचिरे प्रसृते रुचिरे  
मृदु जानुयुगं रुचिरं रुचिरम् ।  
करिडस्त-निभोरुयुगं रुचिरं  
रुचिराधिपते रषिलं रुचिरम् ॥ २ ॥

कटिपुष्ट-नितम्भयुगं रुचिरं  
नतनाभिकञ्जं जठरं रुचिरम् ।  
मृदुलौ स्तननीलमणी रुचिरौ  
रुचिराधिपते रषिलं रुचिरम् ॥ ३ ॥

दृढयं रुचिरं पृथुतुङ्गामुरः-  
स्थलमंसयुगं रुचिरं रुचिरौ ।  
करभौ करकञ्जतले रुचिरे  
रुचिराधिपते रषिलं रुचिरम् ॥ ४ ॥

भुजङ्ग-युगं रुचिरं सिभुङ्कं  
विधुभोदकरं वदनं रुचिरम् ।  
रसना रुचिरा दशना रुचिरा  
रुचिराधिपते रषिलं रुचिरम् ॥ ५ ॥

जलजोपम-कण्ठशिरो रुचिरं  
तिलपुष्प-निभा सुनसा रुचिरा ।  
अधरौ रुचिरावलिकं रुचिरं

रुचिराधिपते रषिलं रुचिरम् ॥ ६ ॥

अरुणो यपले नयने रुचिरे  
स्मरथापनिभे मुनि-शान्तिकरे ।  
भ्रुकुटी रुचिरे श्रवणौ रुचिरौ  
रुचिराधिपते रषिलं रुचिरम् ॥ ७ ॥

उरियन्दन-चर्यित-मङ्गमलं  
तिलकं रुचिरं कुसुमाभरणम् ।  
बहुशस्तिलका रुचिराश्रिकुरा  
रुचिराधिपते रषिलं रुचिरम् ॥ ८ ॥

सितसूक्ष्म-धनं वसनं रुचिरं  
मुनिरञ्जनकं वचनं रुचिरम् ।  
अवलोकन-माभरणं रुचिरे  
रुचिराधिपते रषिलं रुचिरम् ॥ ९ ॥

स्नपनं रुचिरं तरणं रुचिरं  
भरणं रुचिरं शरणं रुचिरम् ।  
रमणं रुचिरं श्रवणं रुचिरं  
रुचिराधिपते रषिलं रुचिरम् ॥ १० ॥

कथनं रुचिरं स्मरणं रुचिरं  
मननं रुचिरं स्तवनं रुचिरम् ।  
दिनयो रुचिरो घटनं रुचिरं  
रुचिराधिपते रषिलं रुचिरम् ॥ ११ ॥

अशनं रुचिरं भुषवास षडा-  
यमनं रुचिरं नमनं रुचिरम् ।  
जलपानमढो रुचिरं शयनं  
रुचिराधिपते रषिलं रुचिरम् ॥ १२ ॥

गमनं रुचिरं दमनं रुचिरं  
शमनं रुचिरं जपनं रुचिरम् ।  
तपनं रुचिरं यजनं रुचिरं  
रुचिराधिपते रषिलं रुचिरम् ॥ १३ ॥

उवनं रुचिरं यमनं रुचिरं  
भजनं रुचिरं त्यजनं रुचिरम् ।  
भवनं रुचिरं सदनं रुचिरं  
रुचिराधिपते रषिलं रुचिरम् ॥ १४ ॥

जननी रुचिरा जनको रुचिरः  
स्वजना रुचिरा मुनयो रुचिराः ।  
भटवो रुचिराः पदगा रुचिरा  
रुचिराधिपते रषिलं रुचिरम् ॥ १५ ॥

अवनं रुचिरं रुचिरं रथनं  
उरुणं रुचिरं रुचिरं करुणम् ।  
पठनं रुचिरं रुचिरं रटनं  
रुचिराधिपते रषिलं रुचिरम् ॥ १६ ॥


वयुनं रुचिरं द्रढभक्तिविरा-  
गसदाशरुणं रुचिरं रुचिराः ।  
परिषन् निजभक्तजना रुचिरा  
रुचिराधिपते रषिलं रुचिरम् ॥ १७ ॥

उरिदृषुषु मुदार-मनन्तमजं  
प्रणतार्तिदरं जलदाभतनुम् ।  
करुणार्द्रशं वृषभक्तिसुतं  
नमनं विदधे सुचिरं रुचिरम् ॥ १८ ॥

छंदमर्थभृतं मुनि-नित्यकृतं  
रुचिरं स्तवनं जनता-पवनम् ।  
श्रुतमात्र-मनोमल-नाशकरं  
जन-तापदरं भवतीष्टकरम् ॥ १९ ॥

इति श्रीनित्यानन्दस्वामिविरचितं रुचिरस्तोत्रं सम्पूर्णम् ।

pdf was typeset on August 9, 2024

——  
Please send corrections to [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

